International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 5, May 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

अलवर राज्य की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

लेखक

डॉ. संतोष गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर
एम. एस. जे. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

अशोक कुमार मीणा
शोधार्थी
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

भारत के इतिहास में जिस प्रकार **राजस्थान** का अपना विशेष स्थान है, उसी प्रकार राजस्थान में **अलवर** रियासत की विशेष महत्ता रही है। **अलवर** राज्य '**पूर्वी राजस्थान के कश्मीर**' एवं '**राजस्थान के सिंह द्वार**' के रूप में विख्यात, अरावली पर्वत की सुरम्य उपत्यकाओं में स्थित है। अपनी प्राकृतिक और ऐतिहासिक विरासत के कारण यह इतिहास में शोध के लिए सदैव महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

अलवर राज्य का प्रारम्भिक इतिहास

भारतवर्ष में जिस प्रकार **राजस्थान** का अपना विशेष स्थान है, उसी प्रकार **राजस्थान** में **अलवर** रियासत की विशेष महत्ता रही है। तुर्क, अफगान, मुगल, राजपूत एवं अंग्रेजों के शासन काल में अलवर दिल्ली के द्वार (समीप) पर होने के कारण राजनीतिक हलचलों एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का केन्द्र रहा है। यह राज्य अपनी गौरवमय ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण अपनी एक अलग पहचान रखता है। अलवर सूर्यवंशी कछवाहा क्षत्रियों की लालावत खांप के नरूकों के अधीन मांचेड़ी सहित अढ़ाई गांव की जागीर (मांचेड़ी, राजगढ़ और आधा राजपुर) से उत्तरोत्तर विकसित होकर राव प्रतापसिंह के समय 25 नवम्बर 1775 को पृथक राज्य के रूप में स्थापित हुआ।[(1)]

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अलवर राज्य को एक पृथक, स्वतंत्र राज्य के रूप में बनाया जा सकता है जब इसके संस्थापक राव प्रताप सिंह ने 25 नवंबर 1775 को अलवर किला के ऊपर अपना स्तर बढ़ाया था । उनके शासन के दौरान थानाजीजी, राजगढ़, मलखेरा, आसवाड़ढ़, बलदेगढ़, कंकर्वरी, अलवर, रामगढ़ और लचामगढ़, और बैहर और बंसुर के आसपास के इलाकों को अंततः राज्य बनाने के लिए एकीकृत किया गया। जैसा कि राज्य को समेकित किया जा रहा था, स्वाभाविक रूप से, कोई निश्चित प्रशासनिक मशीनरी अस्तित्व में हो सकता था। उस समय, राज्यों का राजस्व प्रति वर्ष 6 से सात लाख रूपये था।

अगले शासक महाराव राजा बख्तरवार सिंह (1791 –1815) ने भी राज्य के टेरियोटरी के विस्तार और एकत्रीकरण के काम को समर्पित किया। वह अलमार राज्य में इस्माइलपुर और मंडवार के पंचगानों और दरबारपुर, रूतई, निमराणा, मंडन, बीजावर और काकोमा के तालुको को एकीकृत करने में सफल रहे। महावरा राजा बख्तरवार सिंह ने अलवर इलाके में लासवारी की लड़ाई में, मराठों और जाट शक्तियों को तोड़ने में मदद की, जब मराठों के विरुद्ध मराठों के खिलाफ अभियान के दौरान लॉर्ड झील को बहुमूल्य सेवाएं प्रदान कीं।

नतीजतन, 1803 में, आपत्तिजनक और रक्षात्मक गठबंधन की पहली संधि अलवर राज्य और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच बनाई गई थी । इस प्रकार, ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ संधि संबंधों में प्रवेश करने के लिए अलवर भारत का पहला रियासत था। लेकिन उनके समय में, राज्य प्रशासन बहुत ही असंवेदनशील था और लूट और डकैती के मामले, यहां तक कि व्यापक दिन के प्रकाश में, कभी–कभार ही नहीं थे। राज्य बाहर से धन उधार ले रहा था क्योंकि इसकी वित्तीय स्थिति खराब और कुप्रबंधित थी। अधिकांश भूमि राजस्व का उपयोग ऋण वापस करने के लिए किया गया था और कई बार, खेतों को कठिनाई में डाल दिया गया था जब राज्य के राजा शाहिद महारो विनी सिंह ने सिंहासन का उत्तराधिकारी बना लिया तो राज्य काफी ऋणी थे।

महाराव राजा विनी सिंह (1815–1857) ने सामाजिक अराजकता को दबा दिया और वह काफी हद तक राज्य में सामान्य परिस्थितियों को स्थिर करने में सफल रहा। यह उनके समय में था कि अलवर राज्य प्रशासन ने आकार लेना शुरू किया। भारत के इंपीरियल गेजेटर

के मुताबिक, सरकार को किसी भी प्रणाली के बिना पहले ही ले जाया गया था लेकिन 1838 में दिल्ली से पेश होने वाले कुछ मुसलमानों की सहायता से 1838 में बड़े बदलाव किए गए थे। दयालु और नागरिक और आपराधिक अदालतों के बजाय स्थापित किए गए थे।

महावत राजा विनी सिंह का 1857 में निधन हो गया और उसके पुत्र शीदान सिंह (1857–1874) ने इसका उत्तराधिकारी बना लिया। वह तब बारह के एक लड़के थे वह दिल्ली के मोहम्मद दीवंस के प्रभाव में एक बार गिर गया। उनकी कार्यवाही ने 1858 में राजपूतों के विद्रोह को उत्साहित किया, जिसमें दीवान के कई अनुयायी मारे गए और मंत्रियों को राज्य से निष्कासित कर दिया गया। भरतपुर के राजनीतिक एजेंट कैप्टन निक्सन को एक बार अलवर को भेजा गया, जिसने एक रीजनेंशन काउंसिल बनाया । राज्य के प्रशासन के लिए तीन सदस्यों के साथ एक पंचायत का गठन हुआ था लेकिन यह सफल नहीं हो सका। कप्तान इम्पी नवंबर 1858 में अलवर के अगले राजनीतिक एजेंट के रूप में आए । उनके कार्यालय का कार्यकाल 1863 के अंत तक जारी रहा, जिसके दौरान वह प्रशासित की हर शाखा का पुनर्गठन करने में सफल रहा। तय नकद मूल्यांकन की प्रणाली शुरू की गई थी। राज्य का वार्षिक राजस्व रुपये पर निर्धारित किया गया था 14,29,425 और राज्य के लिए तीन साल के निपटारे पर काम शुरू किया गया था। इस समझौते को पूरा करने के बाद, मेजर इम्पी ने राज्य में दस साल के निपटान पर काम शुरू किया और वार्षिक राजस्व रुपये पर निर्धारित किया गया था। 17,19,875।

महाराव राजा शीओडन सिंह ने 14 सितंबर, 1863 को शासक शक्तियों को ग्रहण कर लिया और शीघ्र ही एजेंसी को समाप्त कर दिया गया। लेकिन प्रशासन जल्द ही बूढ़े दीवानों के हाथों में गिर गया, जो अभी भी शासक के साथ संबंध था। 1870 में, राजपूत घुड़सवार सेना और जगीर के थोक जब्त को नष्ट करने से, प्रमुख और उसकी मुसलमान समर्थकों की अपव्यय को अनुदान दिया, राजपूतों के एक सामान्य विद्रोह के बारे में लाया गया, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने फिर से हस्तक्षेप किया। पूर्व राज्यों के तत्कालीन राजनीतिक एजेंट कप्तान ब्लेयर ने एक सुलह लाने की कोशिश की लेकिन असफल रहे। मेजर कैडल को तब 1867 में राजनीतिक एजेंट नियुक्त किया गया था और भारत सरकार की मंजूरी के साथ,

एक परिषद की स्थापना राजनीतिक एजेंट के साथ राष्ट्रपति के रूप में हुई, बोर्ड में एक सीट होने वाली महाराव राजा थी। प्रशासन का कार्मिक बदल गया था और पूरे प्रशासन को साफ किया गया था। इंजीनियरिंग का एक नया विभाग शुरू किया गया था। तहसीलदारों को अधिक नागरिक और आपराधिक शक्तियों के साथ सौंपा गया था उन्हें दंड के लिए दंड लगाने का अधिकार दिया गया था 20 और एक महीने की कारावास 1871 में, शहर की सुरक्षा के लिए कोतवाली की स्थापना की गई थी। अगले साल 16 साल के समझौते पर काम शुरू हुआ। ब्रिटिश रुपए पर टैक्स को खत्म कर दिया गया और राव–शि सिक्कों को प्रचलन से बाहर रखा गया। 1873 में ब्रिटिश तांबे के सिक्के राज्य में पेश किए गए थे और यार्ड और द्रष्टा की लंबाई और वजन के उपायों को भी उपयोग में लाया गया था। पोस्टल प्रबंधन में सुधार हुआ था और तहसीलों से पत्र, जो पहले तीन दिनों तक राजधानी तक पहुंच गए थे, अब बारह घंटे के भीतर आए थे। निचली अदालतों के फैसले के खिलाफ अपील की सुनवाई के लिए एक अपीली विभाग जिसे अपील कहा जाता है। दिल्ली से बांदीकुईपसिंग को अलवर के माध्यम से रेलवे लाइन 1874 में रखी गई थी।

अगले शासक (1874–1892) के मंगल सिंह, जब वह अलवर राज्य के सिंहासन में सफल हो गए तब भी एक नाबालिग था और राज्य को राजनीतिक एजेंट और रीजेंसी काउंसिल द्वारा दिसंबर, 1877 तक प्रशासित किया जाता था, जब उन्हें शासन के साथ निवेश किया गया शक्तियों। वर्ष 1889 में महाराजा के आनुवंशिक शीर्षक को उस पर दिया गया था । 1877 में, उन्होंने 1876 के मूल निवासी अधिनियम के तहत ब्रिटिश सरकार के साथ अनुबंध में प्रवेश किया था जिसके अनुसार अलवर उपकरण वाले चांदी के सिक्कों को कलकत्ता मिंट द्वारा आपूर्ति की जानी थी। कर्नल (तब मेजर) ओ। मूर क्रेग के मार्गदर्शन में राज्य में सेनाएं फिर से संगठित हुई थीं, जिनके सेवाओं को विशेष रूप से भारत सरकार के उद्देश्य के लिए दिया गया था। स्टाफ कार्यालय नवंबर 1888 में स्थापित किया गया था और महाराजा मंगल सिंह ने स्वयं सैन्य बलों के पुनः संगठन की देखरेख की।

1892 में उनकी मृत्यु पर, उनके एकमात्र बेटे, जय सिंह उन्हें सफल हुए । और यह जय सिंह के समय में था कि अलवर राज्य ने नाम कमाया। खुद एक सक्षम व्यक्ति महाराजा

जेय ने अलवर को एक बहुत अच्छी तरह से प्रशासित राज्य बनाया। वह उत्तराधिकार के समय एक नाबालिग था और इसलिए राज्य प्रशासन एक परिषद द्वारा किया गया था, जिसे राज्य परिषद कहा जाता है, राजनीतिक एजेंट के सामान्य पर्यवेक्षण के तहत कार्य करता है। स्टेट काउंसिल चार सदस्यों से बना था और समय के लिए राजनीतिक एजेंट की सलाह और मार्गदर्शन के तहत संयुक्त रूप से सदस्यों द्वारा प्रशासन के सभी व्यवसाय किए गए थे। राज्य परिषद ने राजनीतिक एजेंट के संशोधन प्राधिकरण के अधीन, उच्च न्यायालय की शक्तियों का प्रयोग किया। राजस्व और न्यायिक अपील और मामलों का निपटान परिषद द्वारा किया गया था।

अलवर के मुख्यालय शहर के रूप में जाना जाता है। अलवर नाम की व्युत्पत्ति के बारे में कई सिद्धांत हैं। कनिंघम मानते हैं कि शहर ने अपना नाम साल्वा जनजाति से प्राप्त किया था और मूल रूप से सैलवपुर, तब, सलवार, हलवर और अंततः अलवर। एक अन्य शोध के अनुसार यह अरावलपुर या अरावली शहर (राजस्थान को तीसरे स्थान पर विभाजित करने वाली एक पहाड़ी प्रणाली के रूप में जाना जाता था)। कुछ अन्य लोगों का कहना है कि शहर का नाम अलवल खान मेवाती के नाम पर है। अलवर के महाराजा जयसिंह के शासनकाल के दौरान किए गए एक शोध से पता चला कि आमेर के महाराजा काकिल (जयपुर राज्य की पुरानी सीट) के महाराजा अलाघराज के दूसरे बेटे ने ग्यारहवीं शताब्दी में इस इलाके पर शासन किया और उनके क्षेत्र में वर्तमान शहर अलवर तक विस्तार हुआ। उन्होंने अपने नाम के बाद 1106 विक्रम संवत (1094 ई।) में अल्पुर शहर की स्थापना की, जो अंततः अलवर बने। इसे पूर्व में उल्वर के रूप में वर्णित किया गया था लेकिन जय सिंह के शासनकाल में वर्तनी को अलवर में बदल दिया गया था।

अलवर जिला राजस्थान के अग्रणी जिलों में से एक है। इस आधुनिक शहर का इतिहास अति प्राचीन है। वैसे तो प्राचीन काल से ही यह नगर बसा हुआ है लेकिन महाभारत काल से इसका विधिवत इतिहास प्राप्त होता है। महाभारत युद्ध से पूर्व यहाँ राजा विराट के पिता वेणु ने मत्स्यपुरी नामक नगर बसा कर उसे अपनी राजधानी बनाया था। राजा विराट ने अपनी पिता की मृत्यु हो जाने के बाद मत्स्यपुरी से 35 मील पश्चिम में विराट जिसे अब बैराठ

के नाम से जाना जाता है, नगर बसाकर इस प्रदेश की अपनी राजधानी बनाया। इसी विराट नगरी से लगभग 30 मील पूर्व की ओर स्थित पर्वतमालाओं के मध्य सरिस्का में पाण्डवों ने अज्ञातवास में समय व्यतीत किया था। तीसरी शताब्दी के आसपास यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंशीय क्षत्रियों का अधिकार हो गया। इसी क्षेत्र में राजा बाधराज ने मत्स्यपुरी से 3 मील पश्चिम में एक नगर तथा एक किला बनवाया। वर्तमान राजगढ़ दुर्ग के पूर्व की ओर इस पुराने नगर के अवशेष अब भी दृष्टिगोचर होते हैं। पाँचवी शताब्दी के आसपास इस प्रदेश के पश्चिमोत्तरीय भाग पर राज ईशर चौहान के पुत्र राजा उमादत्त के छोटे भाई मोरध्वज का शासन था।इसी ने इस क्षेत्र में राजधानी मोरनगरी का निर्माण किया था जो उस समय साबी नदी के किनारे बसी हुई थी। छठी शताब्दी में इस प्रदेश के उत्तरी भाग पर भाटी क्षत्रियों का अधिकार हो गया। राजौरगढ़ के शिलालेख से पता चलता है कि पूर्व में इस प्रदेश पर गुर्जर प्रतिहार वंशीय सावर के पुत्र मथनदेव का अधिकार था, जो कन्नौज के भट्टारक राजा परमेश्वर क्षितिपाल देव के द्वितीय पुत्र श्री विजयपाल देव का सामन्त था।[2] इसकी राजधानी राजपुर थी। 13वीं शताब्दी से पूर्व अजमेर के राजा बीसलदेव चौहान ने राजा महेश के वंशज मंगल को हराकर यह प्रदेश निकुम्भों से छीन कर अपने वंशज के अधिकार में दे दिया। पृथ्वीराज चौहान और मंगल ने ब्यावर के राजपूतों की लड़कियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया। सन् 1205 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने चौहानों से यह देश छीन कर पुन निकुम्बों को दे दिया। 1 जून 1740 रविवार को मौहब्बत सिंह की रानी बख्त कुँवर ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम प्रताप सिंह रखा गया। इसके पश्चात् सन् 1756 में मौहब्बत सिंह बखाड़े के युद्ध में जयपुर राज्य की ओर से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। राजगढ़ में उसकी विशाल छतरी बनी हुई है। मौहब्बत सिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र प्रतापसिंह ने 1775 ई. को अलवर राज्य की स्थापना की।[3]

ब्रिटिश गैजेटर के अनुसार अलवर का क्षेत्र इन निम्नलिखित राजपूत शाखाओं के प्रभुत्व के अनुसार बटा हुआ था ।

1. राठ क्षेत्र – इस क्षेत्र पर संकट गोत्र के चौहान राजपूतो का राज्य था जो आज का नीमराणा और बहरोड़ का क्षेत्र है ।

2. वई क्षेत्र – इस क्षेत्र पर शेखावत राजपूतो का प्रभुत्व था आज का यह बहरोड़ और थाना गाजी का क्षेत्र कहलाता है।

3. नरुखंड़ – इस क्षेत्र पर नरुका और राजावत राजपूतो का प्रभुत्व हुआ करता था। अलवर के सभी राजा इस क्षेत्र से थे ।

4. मेवात क्षेत्र – इस क्षेत्र पर मेव जाति (मुस्लिम), गैर राजपूत जाति अधिक पाई जाती है।

राजस्थान राज्य में अलवर जिले का अपना ऐतिहासिक महत्व और गौरव है। बदले हुए भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में अलवर को समझने के लिए इसके इतिहास को प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक काल में विभाजित किया जा सकता है। पौराणिक दृष्टि से अलवर जिला अपने प्राचीनतम सन्दर्भों में महापराक्रमी राजा हरिण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, प्रहलाद, सूर्यवंशी राजा बृहदाश्व अंबरीष, चन्द्रवंशी राजा उपरिचर तथा उनके वंशजों से जोड़ा जाता रहा है। कहा जाता है कि महाभारतकाल में अलवर उलूक के तथा तिजारा क्षेत्र त्रिगर्तराज सुशर्मा के आधिपत्य में था।[4]

राजगढ़ के समीप माचेड़ी कस्बे में मत्स्यपुरी के नाम से राजा मत्सिल की राजधानी होने का भी उल्लेख मिलता है। मत्सिल के दूसरे पुत्र वनसैन के पुत्र को विराट भी कहा गया है। मत्सिल के दूसरे पुत्र वनसैन के पुत्र को विराट भी कहा गया है जिसके यहां पांडवों ने अपना एक वर्ष का अज्ञातवास बिताया था। आज के अलवर का विस्तार तिजारा से विराटनगर के मध्य है। राजोरगढ़ में प्राप्त शिलालेख से प्रमाणित होता है कि 9 से 10 वीं शताब्दी में अलवर जिले का दक्षिण भाग गुर्जर प्रतिहार राज्य में सम्मिलित था। उसके बाद चौहान शासक बीसलदेव के संक्षिप्त शासन के बाद इस क्षेत्र में क्षत्रियों का शासन रहा। निकुंभ क्षत्रियों के बाद इस क्षेत्र में खानजादों का शासन स्थापित हुआ।[5] अलावलखां खानजादे ने निकुम्भ क्षत्रियों से यह भूकृभाग छीनकर 1549 में अलवर दुर्ग का परकोटा बनवाया।

अलावलखां का पुत्र हसनखां मेवाती अलवर का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्व था जिसने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी की ओर से तथा उसके बाद चित्तौड़गढ़ के राणा सांगा की ओर मुगल आक्रांता बाबर से जमकर लोहा लिया और खानवा के युद्ध क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुआ। बाबर द्वारा यह क्षेत्र अपने पुत्र हिंदाल को और बाद में हुमायूं द्वारा

अपने सेनानायक तुर्दीवेग को दिया गया।[6] हसनखां मेवाती के भतीजे जमालखां की बड़ी पुत्री से स्वयं हुमायूं ने और उकी छोटी पुत्री से उसके सेनापति बहराम खां ने शादी की जिसकी कोख से हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और अकबर के दरबारी नवरत्नों में से एक अब्दुल रहीम खानखाना जो रहीम के नाम से प्रसिद्ध हुए ने जन्म लिया। अकबर के शासनकाल में उसके बहनोई मिर्जा शरफुद्दीन व औरंगजेब के राज्यकाल में मिर्जा राजा जयसिंह के अधीन यह क्षेत्र रहा। पतनोन्मुख मुगल साम्राज्य के अन्तिम दौर में भरतपुर के जाट राजा सूरजमल और उसके पुत्र जवाहरसिंह के अधीन भी यह क्षेत्र रहा।[7]

मुगल काल में पराभवकाल की राजनैतिक अस्थिरता के दौर में सन् 1775 में रावराजा प्रतापसिंह ने अलवर राज्य की स्थापना की। उनके परवर्ती शासक रावराजा बख्तावरसिंह, महाराजा विनयसिंह, सवाई शिवदानसिंह, सवाई मंगलसिंह, महाराजा जयसिंह और तेजसिंह ने राजस्थान निर्माण तक यहां शासन किया।

मानचित्र संख्या 1.1: अलवर का मानचित्र सन् 1944–1945

*** जैन, एम. एस., आधुनिक राजस्थान का इतिहास, पृ. 256*

रियासती शासन के अन्तिम दौर में प्रजातन्त्री शासन व्यवस्था के लिए संघर्षरत प्रजामंडलों के अभियान और स्वाधीनता प्राप्ति के साथ देशव्यापी साम्प्रदायिक अशान्ति से उभरकर अंतत 19 मार्च 1948 को अलवर, भरतपुर, करौली और धौलपुर रियासत को मिलाकर बनाए गए मत्स्य संघ में सम्मिलित हुआ एवं 22 मार्च 1949 को मत्स्य संघ के वृहद् राजस्थान में विलीनीकरण के साथ यह क्षेत्र राजस्थान राज्य के एक जिले के रूप में स्वतंत्र भारत की एक ईकाई बन गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रा. रा. अभि. अलवर, बस्ता 343, क्रंमाक 26, नंदलाल टिक्कू एसेसमेंट रिपोर्ट *अलवर एवं बानसूर* तहसील 1922–23, पृ. 10
2. राज. रा. अभि., बीकानेर, क्रंमाक 132, बस्ता 18, बण्ड 9, पृ. 10
3. रिपोर्ट ऑफ द अलवर फेमिन ऑफ 1899–1900, प्र. *राजपूताना मिशन प्रेस, अजमेर*, पृ. 1–2
4. अग्रवाल, आर० ए०, 1889 मारवाड़ पेंटिंग, अगम प्रकाशन, दिल्ली
5. टॉड जेम्स, 1955, बीकानेर राज्य का इतिहास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर
6. शर्मा, गोपीनाथ, 1981 , राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा
7. भाटी, एन० एस०, 1961, स्टडीज इन मारवाड़ हिस्ट्री, आर० एस० एस० सी०, जोधपुर
8. बीच, मीलो क्लेवेलैंड, राजपूत पेर्जिन्टग एट बुन्दी एण्ड कोटा, आर्टिबस आसी पब्लिशर्स, अस्कोना, स्वीट्जरलैंड
9. पाउलेट, पी. डब्ल्यू, *गजेटियर ऑफ अलवर* (अनु. अनिल जोशी), पृ.1
10. (अ) हैण्डले, टी. होल्बन, *अलवर एण्ड इट्स* आर्ट ट्रेजर, (अनु. अनिल जोशी), पृ. 14
    (ब) पाउलेट, पी. डब्ल्यू., *गजेटियर ऑ अलवर* (अनु. अनिल जोशी), पृ. 1
11. हैन्स एडवर्ड सैल्डॉन, *पालिटिकल रोल ऑफ दा किग्सशिप एलाइट इन अलवर, 1858. 1910*, डिपार्टमेन्ट ऑफ हिस्ट्री, ड्यूक यूनिवर्सिटी, 1975, पृ. 2–28
12. मायाराम, *राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर*, अलवर, पृ. 5

13. गहलोत, जगदीशसिंह, *कछवाहों का इतिहास*, पृ. 285
14. मायाराम, *राजस्थान डिस्टिक्ट गजेटियर*, अलवर, पृ. 6
15. श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, द्वितीय खण्ड, पृ. 1357
16. गहलोत, जगदीश सिंह, *कछवाहों का इतिहास*, पृ. 285
17. अनट्राक्ट ऑपी, 1889ट्रेडिसनल ज्वेलरी ऑफ इंडिया, टेम्स एण्ड हडसन लि०, लंदन
18. ओझा गौरीशंकर हीराचन्द, 1889बीकानेर राज्य का इतिहास, वोल्युम – । तथा ।।, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर